IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दलित चेतना शैलैश मटियानी की कहानियों में

अनुजा कुमारी
षोधार्थी
भूपेंद्र नारायण मंडल विष्वविद्यालय मधेपुरा, बिहार

शैलेश मटियानी जी ने दलित साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। शैलेश मटियानी के अनेक कहानी संग्रह हैं जिनमें कुमाऊँ अंचल के जीवन यथार्थ को मानवीय संवेदना के स्तर पर चित्रित किया गया है।उन्होंने गरीबी का जीवन जिया है।उन्होंने स्वयं अपनी आँखों से दलित, असहाय, पीड़ित, निर्धन, निम्न लोगों के जीवन को देखा है। परिणामतः उनकी अधिकांश कहानियों में दलित चेतना का जिस प्रकार का वातावरण चित्रण किया है, उस वातावरण में उन्होंने जीवनयापन भी किया है।

शैलेश मटियानी हिन्दी कथा साहित्य जगत में विलक्षण प्रतिभा रखने वाले कथाकार हैं इनकी कहानियों पर शोध करना, जहाँ कहानीकार की कहानियों में वर्णित दलित जातियों की रूप रेखा, जीवन पद्वति, समस्याएं, उनमें उभरी हुए चेतना की खोज करना, वही हिन्दी पाठक के समक्ष एक नया दलित ग्रंथ प्रस्तुत करना है।

दलित रचनाकार अपने परिवेश एवं समाज के गहरे सरोकारों से जुड़ा है। वह अपने निजी दुःख से ज्यादा समाज की पीड़ा को महत्ता देता है। जब वह 'मैं' शब्द का प्रयोग कर रहा होता है तो उसका अर्थ 'हम' ही होता है। सामाजिक चेतना उसके लिए सर्वोपरि है। अपने समाज के दुःख–दर्द उसे ज्यादा पीड़ा देते हैं। शैलेश मटियानी जी ने कहीं न कहीं दलित पीड़ा को समझा है और अपनी कहानियों में इसे स्वर दिया है। अपनी मिट्टी के प्रति, एक विशेष लगाव होने के कारण मटियानी जी की अधिकांश कहानियों का परिवेश कुमाऊँ प्रवेश है। वह आजीविका के लिए दिल्ली, बम्बई जैसे नगरों में दर–दर की ठोकरें खाते रहे। उनकी कहानियों में एक ओर जहाँ कुमाऊँ प्रदेश का परिवेश मिलता है। दूसरी ओर वहाँ नगरीय जीवन के विभिन्न आयाम मिलते है।

उनकी कहानियों में भोगे हुए यथार्थ के कड़वे अनुभव मिलते है। उनकी कहानियों में अपने परिवेश का प्यार झलकता है तो दूसरी ओर समाज द्वारा प्रताड़ित और शोषित ऐसे लोग मिलते है जो नरक के समान जीवन जीने को विवश है। इन पात्रों में भिखमंगे, उठाईगीरी, चोर–बदमाश, जेबकतरे, वेश्याएँ आदि पात्र शामिल है।

केवल इतना ही नहीं अपितु उकी दृष्टि ऐसे पात्रों पर पड़ी जो उच्च मानवीय मूल्यों से युक्त है। यही कारण है कि उनके साहित्य में दलित जाति के समस्त सरोकारों का रेखांकन मिलता है। दलित जीवन पर शोध करने के लिए शैलेश की कहानियाँ पूर्णतया सहयोगी हैं। प्रस्तुत शोध विषय में दलितों के जीवन में आने वाले सभी पड़ावों का वर्णन करना अनिवार्य हैं। मटियानी का समस्त साहित्य लेखन बहुत व्यापक एवं विस्तृत हैं। उनके दलितों से सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य पर शोध करना असंभव तो नहीं था, लेकिन उसमें प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों का अभाव रह जाता। इसी कारण यहाँ विषय से सम्बन्धित कहानियों का ही चुनाव किया गया है।

हिन्दी कहानी का उद्भव विकास कहानी का मानव जीवन के साथ प्रारम्भ से ही मधुर सम्बन्ध रहा है। बाल्यावस्था से ही सभी को कहानियाँ सुनने को मिलती रही है। बचपन में ही हम सभी ने अपने माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी या चाचा–ताऊ आदि से कहानियाँ सुनी होगी। कहानी में निरन्तर जिज्ञासा या कौतुहल का भाव विघमान रहता है। कहानी का श्रोता या पाठक यह जानने का इच्छुक रहता है कि आगे क्या होगा। यदि कहानी से यह तत्व लुप्त हो जाये तो कहानी का अस्तित्व ही नहीं रहेगा कहानी का विकास प्राचीनकाल से माना जाता है। पंचतन्त्र, हितोपदेश, कथासरितसागर, बत्तीस फतलियों की कथा, बैताल कथाएँ, बौद्धजातक–कथाएं तथा रामायण–महाभारत एवं अन्य फराणों में हमें सैकड़ों कहानियाँ मिलती हैं। परन्तु यहाँ इस लक्ष्य को स्पष्ट करना होगा कि उपर्युक्त कहानियों को आख्यायिका, गल्प, आख्यान व कथा तो माना जा सकता है, उस अर्थ में कहानी नहीं जिस अर्थ में आज कहानी लिखी जा रही है। प्राचीन कथा स्थूल कथावस्तु प्रधान, मनोरंजन प्रधान, बोध प्रधान तथा कथा सूत्रों पर आधारित होती थी, जबकि आधुनिक कहानी अधिक सूक्ष्म, चरित्र चित्रण प्रधान, मानव परिवेश प्रधान तथा भोगे हुए यथार्थ से जुड़ी है। वर्तमान कहानी में आधुनिक मानव के जीवन को विविध कोणों से देखकर उसका सही परिप्रेक्ष्य में चित्रण करने का प्रयास किया जाता है।

मटियानी जी ने तो जीवन के सबसे निचले स्तर की समस्याओं को बड़े आत्मयता के साथ अनुभव करते हुए अपने साहित्य में उसे उकेरा है। महानगरीय जीवन की विकलांगता के वे स्वयं साक्षी रहे हैं। नरक जैसा जीवन जीने के बाद, उनके मन में मानवता के प्रति जो आस्था तथा लगाव है वह उसे महान लेखकों की श्रेणी में खड़ा करता है। मटियानी जी का मानना था कि साहित्यकार को सिर्फ अपने लेखन कार्य का ही नहीं प्रयुक्त व्यक्ति के निष्कर्ष पर भी आंकना आवश्यक है। उन्होंने लिखा है –"मैं साहित्यकार का दायित्व अपने और अपने कृतित्व के लिए यशार्जन तक ही सीमित नहीं मानता हूँ, प्रत्युत यह भी प्रत्येक साहित्यकार का कर्त्तव्य होता है, कि वह कृतित्व और व्यक्तित्व के माध्यम से अपने समसामयिक और आगत पीढ़ियों के रचनाकारों को ऐसी प्रेरणा दे कि वे कटुतर संघर्ष के क्षणों में भी अपने स्वधर्म के लिए आस्था जुटा सकें। साहित्य–सृजन और

यशार्जन के 'गुरों' को अपनी छाती में ही दबाये रखना नहीं, प्रत्युत् अपने अनुभवों को औरों के सामने उन्मुक्त–मन लेखनी से प्रस्तुत करके, उनकी सम्भावनाओं के मार्ग को भी प्रस्तुत करना साहित्यकार का कर्त्तव्य होता है ।'' अपने जीवन–संघर्ष के संदर्भ में मटियानी जी लिखते हैं–'' लेखक और व्यक्ति के नाते, मेरा अब तक का जीवन संघर्षपूर्ण रहा है।इतना संघर्षपूर्ण कि सिर्फ दो ही संभावनाएं कि जितना कटु–प्रखर जीवन मुझे जीना पड़ा, वह साहित्यकार बनने की दिशा में मेरे लिए एक वरदान सिद्ध हो ।''निःसंदेह कहा जा सकता है कि वह संघर्षपूर्ण जीवन मटियानी जी के लेखन कार्य के लिए अवश्य वरदान सिद्ध हुआ है।

दलित जीवन के विषय में संक्षेप में बोलना या विचार करना ऊंट के मुंह में जीरा जैसी स्थिति होगी। आज इस विषय के बारे में विस्तार से विचार विमर्श करना पड़ेगा। इस विषय के बारे में क्रान्तिकारी कथाकार शैलेश मटियानी ने अपनी कहानियों में खुले और सहज विचारों में अपनी बात पुरजोर तरीके से कही है। जो हमें कहीं न कहीं से झिझोंड कर रख देती है और हमें दलित वर्ग के बारे में सोचने पर मजबुर करती है। बहुत समय पहले प्रेमचन्द की कहानियों में भी इस विमर्श को उभार मिला है। जो इस समाज पर कटाक्ष का काम करती है। धर्म, समाज, शास्त्रादि ने इस समाज को कईं वर्गों में बाँट दिया है और दलित जीवन पर इसकी कहीं न कहीं व्यंगात्मक चोट लगी है। जिसके कारण दलित को कईं चीजों से महरूम रखा है जहाँ–शिक्षा, धर्म, रोटी कपड़ा और मकान। अतः दलित विमर्श के कतिपय आयामों पर विचार कर लेना अत्यावश्यक हो जाता है। आज हमें दलित को ऊपर उठाने के लिए उन्हें साथ लेकर चलना पड़ेगा और उनके लिए अनेक योजनाएँ लागू करनी होगी जिनसे उनका उत्थान हो और समाज की अपेक्षित निगाहों से उन्हें बचाया जा सके सबसे पहले हमें उनके शिक्षा के स्तर को उठाना पड़ेगा ताकि उनमें सामाजिक ज्ञान व चेतना का संचार हो सके। और वे अपने अधिकारों को पहचान सकें प्रारम्भिक काल में शिक्षा की कमी के कारण इस विषय को साहित्यिक रूप देने वाले विचारकों की संख्या बहुत कम थी। जिसके कारण इस विषय के बारे में किसी ने अधिक ध्यान नहीं दिया। जिसके कारण दलित जीवन को चेतना का स्वरूप नहीं मिला और एक बहुत बड़ा वर्ग समाज के दायरे से अनभिज्ञ रहा है। इसलिए हम कह सकते हैं कि सख्त जरूरत है।

दलित जाति के लोगों में उच्चवर्गीय लोगों व पण्डितों द्वारा भय और आतंक की स्थिति पैदा की हुई थी, जिसको मटियानी जी ने अपनी कहानियों में सहज ढंग से पिरोया। जिसमें 'सतजुगिया आदमी' ऐसी कहानी है जिसमें हमें यह भय और आतंकवाली स्थिति मिलती है। प्रस्तुत कहानी हरराम पुरोहित केशवाचंद की मंत्र–तंत्र शक्ति से बहुत ही डरा हुआ और आतंकित है। हरराम के पुत्र परराम ने सब युवा शिल्पकारों को इक्ट्ठा करके एक संगठन बनाया और उसमें यह कहा कि कोई भी शिल्पकार ऐसा काम नहीं करेगा जिससे उनको घृणित व दलित समझा जाए। पुरोहित केशवाचंद की जब भैंस मर जाती है, तब उसे उठाने के लिए वह हरराम को बुलावा भेजता है। इस पर हरराम अपने पुत्र परराम को इस काम को करने के लिए कहता है तो परराम न तो खुद जाता है और न ही किसी दूसरे को जाने देता है। तब उसका बाप हरराम क्रोधित होकर कहता है– 'खुला ब्रह्मद्रोह है। यह साले तू नहीं, तो क्या यह सत्तर साल का बूढ़ा तेरा बाप खींचेगा दस मन की भैंस?''

हरराम पंडित केशवानंद से बहुत डरा हुआ था और वह सोच रहा था, कहीं केशवानंद जी कुपित होकर कोई शाप न दे दें। केशवानन्द के पिता पुरोहित राघवानंद की शक्ति हरराम अपनी आँखों से देखता आया है कि कैसे–कैसे विषैले सांपों, भूतप्रेतों को, मंत्रों से ही बांध देते थे। फनफना कर डंसने को आता हुआ विषधर सांप उनके 'ओम्–ओम्' कहने मात्र से अपनी ही ठौर स्थिर हो जाता था और ऐसे नाचने लगता, जैसे कोई संपेरा बीन बजा–बजाकर उसे वश में कर रहा हो– ''ओम्– विषणु– विष्णु– विष्णु।''

शैलेश मटियानी जी की कहानियों में नारी जीवन का सहज व कर्मठ चित्रण देखने को मिलता है जिसमें उन्होंने नारी को समाज के थपेड़ो से जुझते हुए दिखाया है। ऐसे नारी पात्रों में 'नंगा' कहानी की रेवती, 'पत्थर' की गपूफरन, 'चील' की सतनारायणी, 'प्यास' की कृष्णाबाई, 'मिट्टी' की गनेशी, 'महाभोज की शिवरती, 'अहिंसा' की बिन्दा, 'भंवरे की जात' की कुन्तुली मिरासिन, 'सावित्री' की सावित्री मिरासिन, 'कपिला' की कपिला घोड़यानी आदि की परिगणना कर सकते हैं।

'नंगा' कहानी की रेवती का पति ठाकुर गुमानी के यहाँ हल जोतने का काम करता था और किन्हीं कारणों से उसकी मृत्यु हो जाती है। ठाकुर गुमानी एक बुरी दृष्टि वाला आदमी था जिसकी हमेशा गन्दी नज़र रेवती पर गड़ी रहती थी। गुमानी ने अपने स्वार्थ के लिए उनके रहने के लिए घर बनवा कर दे रखा था रेवती अपने पति की मृत्यु के बाद भी उसी में रहती थी। हरिराम की मृत्यु के बाद रेवती तो अपने पुश्तैनी मकान में रहने जा रही थी, पर गुमानी ठाकुर ने ही उसे रोक लिया था। रेवती ने भी हालात से समझोता करके ठाकुर को अपने आदमी के रूप में स्वीकार कर लिया था और इसलिए ठाकुर से उसे गर्भ ठहर जाता है। ठाकुर ने गर्भ गिराने के लिए बहुत प्रयत्न किया, परन्तु अधिक महीने होने के कारण गर्भ नहीं गिराया जा सकता। तब यह तय होता है कि रेवती बच्चे को जन्म देगी, पर उसके बाद कोसी नदी में उसे बहा देगी। किन्तु बच्चे को जन्म देने के बाद रेवती के भीतर की ममता जाग उठती है और वह विरोधी हो जाती हैं। रेवती अपने बेटे को हक दिलाने के लिए ठाकुर के खिलाफ पंचायत में पहुँचती है परन्तु पंचायत में तो सब गुमानी ठाकुर की ही जी हजूरी करने वाले बैठे थे। गुमानी ठाकुर को कुछ कहने की अपेक्षा, उल्टे वे रेवती को ही मुआफी मांगने के लिए विवश करते हैं, तब पंचायत को फटकारते हुए रेवती कहती है कि मेहनत–मजदूरी करके वह अपने बेटे नरराम को पाल लेगी और यदि वह हरिराम की घरवाली है और नवजात शिशु नरराम की महतारी तो वह गुमानी ठाकुर की जमीन पर हगने–मूतने भी नहीं जाएगी, जिसने थूककर चाट लिया है।''

'पत्थर' कहानी की गपूफरन में भी हमें हिम्मत व जूझारूपन देखने को मिलता है। वह एक नेकदिल और वफादार औरत है। गपूफरन का शौहर रमजानी एक कामचोर और हरामखोर आदमी है। लेकिन गपूफरन मेहनत–मजदूरी करके न केवल उसे खिलाती–पिलाती है बल्कि उसके सारे शौक भी पूरे करती है। पान–सिगरेट, शराब और मटन–बिरयानी सब चाहिए रमजानी को, और गपूफरन ये सब उसे देती थी। बस उसकी एक ही तमन्ना थी– ''या अल्ला रसूल, उन्हें राजी–खुशी रखना।''

आज समाज में अमानवीयता की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। यह प्रवृत्ति दो तरु विकसित हो रही है। भौतिक सुख की इच्छा मनुष्य की सोच को संकीर्ण और स्वार्थी बना रही है जिसके कारण मानव जाति पतन की ओर बढ़ती जा रही है। मनुष्य अपने व्यक्तिगत पथ से भटक गया है जो उसे अति–दरिद्रता, अति अन्याय और अति–अत्याचार की तरु धकेल रहा है। यहाँ हम उदाहरण के रूप में कह सकते हैं– 'भय' कहानी का नायक सीताराम नामक भिखारी के मुर्दे को कहीं से उठा लाता है और उसका इस्तेमाल भीख मंगवाने के लिए करता है। उस पर रोने के लिए यह ननकू की औरत और दो बच्चों को ले आता हैं उसकी यह प्रवृत्ति अमानवीय कही जा सकती है। परन्तु उसने बचपन से गरीबी, भुखमरी और अपमान ही देखे हैं। वह उस दृश्य को कभी नहीं भुला पाता कि उसकी माँ उसके मरे हुए पिता के जेबों को तलाश रही थी। कहीं कुछ रुपये मिल जाय! उसी स्त्री की क्या मजबूरियां और विवशताएँ रही होंगी कि ऐसी भयंकर दारुण परिस्थिति में भी उसे अपनी गरीबी की वास्तविकता नहीं भूलती। 'प्यासा' कहानी का पांडुरंग मामा भिखारियों का ही व्यवसाय करता है। वह मुर्दों को भी खरीदकर बेचता है। भीख मांगने–मंगवाने के लिए भी मुर्दों की

जरूरत रहती है। पर पांडुरंग मामा ने भी अपनी जिन्दगी की शुरुआत भीख मांगने से ही की थी। जब से होश संभाला बम्बई की फूटपाथों ने ही उनको पनाह दी। अतः उनमें यदि इस प्रकार की अमानवीय प्रवृत्ति विकसित होती है, तो उसमें अचरज की कोई बात नहीं है।

जहाँ लेखक ने हमें अमानवीय प्रवृत्तियों से परिचित कराया है वहीं दूसरी ओर अपनी कहानियों में ऐसे पात्रों का चित्रण भी किया है जो उच्च मानवीय मुल्यों से ओतप्रोत हैं। असहज लेखक की यही एक पहचान होती है कि वह सामान्य और निम्नत्तर जीवन में से भी असामान्य पात्रों और स्थितियों का निर्माण करता है।

'सतजुगिया आदमी' का हरराम, 'धुधुतिया त्यौहार' का देवराम 'नंगा' की रेवती, 'एक कॉप चाः दो खारी बिस्किट' के नसीम और रामन्ना, 'पत्थर' की गपूफरन, 'प्यासा' की कृष्णाबाई, 'मिट्टी' की गनेशी, 'मैमूद' की जद्दनबी, 'महाभोज' की शिवरत्ती, 'प्रेतमुक्ति' का किशनराम, 'सावित्री' की सावित्री, 'चुनाव' का कृष्णाकांत, 'लाटी' कहानी की लाटी, 'कपिला' कहानी की कपिला घोड़यानी, 'इल्लेस्वामी' कहानी का स्वामी आदि ऐसे ही पात्र है जिनमें हमें उच्च मानवीय मूल्यों के दर्शन होते हैं। सुख–संपन्नता की स्थिति में तो कोई भी व्यक्ति धर्म का पालन कर सकता है, किन्तु भयंकर दारुण स्थितियों में धर्म का निर्वाह अत्यन्त कठिन कार्य है और ऐसे लोग बिरले होते हैं।

मटियानी जी के कथा साहित्य में यथार्थवाद का सहज चित्रण देखने को मिलता है। उनके साहित्य में प्रगतिवादी जीवन–मूल्य शुरू से रहे हैं बल्कि उन्होंने जितना दलित– पीड़ित– शोषित– उपेक्षित–मानवता का पक्ष लिया है, उतना शायद दूसरा कोई भी साहित्यकार इस संदर्भ में उनसे तुलना नहीं कर सकता। अतः उनके लेखन में हमें जगह–जगह पर अन्धविश्वास की प्रचुरता देखने को मिलती है। 'प्रेतमुक्ति', 'सतजुगिया आदमी' आदि कहानियों में अंध–विश्वास का चित्रण मिलता है, तो 'चिथड़े', 'गरीबुल्ला', 'फर्क, बस इतना है', 'बिट्ठल', 'चील', 'प्यास', 'इब्बू मलंग', 'रहमतुल्ला' जैसी कहानियों में अनेक स्थानों पर हमें ढोंगी साधु–पीर–फकीर आदि मिलते हैं और वे लोग अनपढ़ गरीब लोगों को अंधविश्वास के सहारे कैसे ठगते हैं उसका व्यंग्यात्मक लेखन मटियानी जी के कथा लेखन में दिखने को मिलता है।''

मटियानी जी के कहानी लेखन से हम समाज के जिस चित्रण को चरितार्थ करते हैं उससे हम इस निष्कर्ष तक सहजता से पहुँच सकते हैं कि दलित जीवन और निम्न वर्ग की पीड़ा का मटियानी जी को सहज ही अहसास है। जिससे उनके लेखन में दलितों की जीवनशैली का खुलकर वर्णन किया गया है। विशेषतः बम्बई के परिवेश की कहानियों में निम्न–से–निम्न प्रकार का जीवन उन्होंने चित्रित किया है जो जातिगत या वर्गगत संस्तरण में कहीं नहीं आता है। उनकी कहानियों में जहाँ एक तरफ गुण्डों, बदमाशों, जेबकतरों, उठाईगीरों और जुआरियों का संसार मिलता है वहीं दूसरी तरफ वेश्याओं, भिखारियों, कोढ़ियों, लूले–लंगड़ों, अपाहिजों को संसार की स्पष्ट झलक मिलती है और उनके यथार्थ के सही–सही दर्शन होते हैं। स्वयं भुक्तभोगी होने के कारण भी उनकी अनेक कहानियों में हमें अनाथ बच्चों की व्यथा, कसक और वेदना मिलती हैं। उनकी पहाड़ी–परिवेश की कहानियों में तथा इलाहाबाद के परिवेश की कहानियों में जो दलित–जीवन का चित्रण मिलता है। दलितों में जो नयी चेतना उभर रही है उसे भी रेखांकित किया गया है। दलितों में पुरानी पीढ़ी के लोगों में ब्राह्मण–पुरोहित पंडित के प्रति एक भय और आतंक का भाव मिलता है। इस वर्ग के प्रति उनके मन में श्रद्धा–भक्ति का भाव है, पर उसके मूल में कहीं न कहीं भय और आतंक भी है। मटियानी जी की कहानियों में अमानवीयता की प्रवृत्ति भी मिलती है लेकिन यह प्रवृत्ति समाज के दोनों वर्गों के लोगों में देखने को मिलती है। इसे मटियानी जी की कहानियों का एक सबल पक्ष कहना चाहिए कि यहाँ गहराते अंधकार के बीच भी प्रकाश की कुछ किरणें उच्च मानवीय मूल्यों के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

संदर्भ

- ✓ सतजुगिया आदमी, बर्फ की चट्टानें, पृष्ठ 129
- ✓ पत्थर, शैलेश मटियानी की इक्यावन कहानियाँ, पृव्म्यास, शैलेश मटियानी की इक्यावन कहानियाँ, पृष्ठ 318–319
- ✓ मिट्टी, शैलेश मटियानी की इक्यावन कहानियाँ, पृष्ठ 227
- ✓ महाभोज, भविष्य तथा अन्य कहानियां, पृष्ठ 99
- ✓ भवरे की जात, प्रेमचन्द और शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित विमर्श, डॉव् कल्पना गवली, पृष्ठ 237
- ✓ प्रेमचन्द और शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित विमर्श, डॉव् कल्पना गवली, पृष्ठ 238, 239